ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 42 • अंक 167-168 • जुलाई-दिसम्बर 2015

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Scanned by CamScanner

तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-42 VOL.-167-168 JULY-DECEMBER, 2015

अनुक्रमणिका / CONTENT

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	05-08
Non-violence: It's Different Aspects	Prof. B.R. Dugar	09-20
Tragedies in Sanskrit (Literature) Dramas: A Resume	Dr Chandramouli S. Naikar	21-26
Health and Happiness in Jainism	Dr. Samani Rohit Pragya	27-37
Use and Evolution of Languages in Jain Literature	Abhishek Jain	38-48
Veganism with Jainism : A Better Life for Everyone	Gabrial Mc Carty	49-62

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
उमास्वति और उनका तत्त्वार्थसूत्र	प्रो. सागरमल जैन	63-72
समाधिमरण के वैदिक पुराणगत उल्लेख	प्रो. दामोदर शास्त्री	73-83
तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक में निर्विकल्पक प्रत्यक्ष एवं स्वसंवेदन प्रत्यक्ष	प्रो. धर्मचन्द जैन	84-95
अहिंसा का आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पक्ष : आचाराङ्ग के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	96-109
शिक्षा के विकास में सम्यग् दर्शन की भूमिका : एक अध्ययन	डॉ. गिरधारीलाल शर्मा	110-114
आचार्य कुन्दकुन्द के आधार पर निश्चय और व्यवहार नय की समीक्षा	डॉ. आलोक कुमार जैन	115-125

Scanned by CamScanner

शिक्षा के विकास में सम्यग् दर्शन की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ. गिरधारीलाल शर्मा

भारतीय दर्शनों में जैन दर्शन का अप्रतिम महात्म्य है। सभी भारतीय दर्शनों में जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति माना गया है। जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति हेतु रत्नत्रयी अर्थात् सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चारित्र की साधना का विधान किया गया है। यथा -

'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्ष मार्ग :।' - तत्त्वार्थ सूत्र - 1/1

रत्नत्रयी में साधना की दृष्टि से सम्यक्दर्शन का प्रथम स्थान है, क्योंकि दर्शन के बिना ज्ञान, ज्ञान के बिना चारित्र, चारित्र के बिना कर्ममोक्ष और कर्ममोक्ष के बिना निर्वाण नहीं हो सकता। यथा–

नादंसणिस्य नाणं नाणेण विणा न हुन्ति चरण गुणा।
अगुणिस्य नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्य निव्वाणं।।

(उत्तरज्झायाणि 28/30)

जीवन में सुख एवं सफलता प्राप्ति का मूल सूत्र है- सम्यक् दर्शन का विकास तथा सम्यक् दर्शन के विकास का सर्वोत्तम माध्यम है– शिक्षा।

सम्यक दर्शन का सम्प्रत्य

जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा गया है - 'तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यक् दर्शनम्' (तत्त्वार्थ सूत्र : 1/2)। पदार्थ जिस रूप में अवस्थित है, उसका उस रूप में होना तत्त्व है। जीवादि पदार्थों को अर्थ कहते हैं। तत्त्व और अर्थ दोनों का समास पद तत्त्वार्थ बनता है, जिसका अर्थ - वस्तु के स्वरूप सहित जीवादि पदार्थों का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है।

Scanned by CamScanner

आचार्य तुलसी के अनुसार - 'यथार्थ दृष्टि : सम्यग्दर्शनम्' (जैन सिद्धान्त दीपिका 6/2) यथार्थ दृष्टि सम्यक् दर्शन है। सम्यक् दर्शन हमारी विचार शुद्धि का आधार है। आचार की शुद्धि के लिये विचार की शुद्धि अनिवार्य है। इस प्रकार सम्यक् दर्शन वस्तुतः सही दृष्टिकोण (Right Attitute) का पर्याय है। जब तब सही दृष्टिकोण का विकास नहीं होगा, तब तक आचरण सही नहीं हो सकता और बिना सही आचरण के जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अतः दृष्टि की पवित्रता और विचारों की शुद्धता सफल जीवन की प्रथम सीढ़ी है।

वर्तमान समाज में विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त समस्याओं पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि इन सभी समस्याओं का मूल कारण है- व्यक्ति का मिथ्या दृष्टिकोण। वर्तमान में व्यक्ति ने धन एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति को ही जीवन का साध्य मान लिया है, और इन्हें प्राप्त करने की अंधी दौड़ समाज में व्याप्त समस्त समस्याओं का प्रमुख कारण है।

अर्थार्जन के प्रति मिथ्या दृष्टिकोण के कारण समाज में भ्रष्टाचार, मंहगाई, कालाबाजारी, मिलावट खोरी, शोषण जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। नारी के प्रति मिथ्या दृष्टिकोण का ही परिणाम है - समाज में निरन्तर बढ़ रही यौन-शोषण की घटनाएं तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसा जघन्य अपराध। इस प्रकार शिक्षा क्षेत्र में भी विभिन्न समस्याओं जैसे- अनुशासनहीनता, गुरु-शिष्य सम्बन्धों की घटती गरिमा, परीक्षाओं में अनैतिकता आदि के मूल में गुरु तथा ज्ञान के प्रति मिथ्यादृष्टि का होना प्रमुख है। इन विभिन्न समस्याओं के समाधन हेतु आवश्यकता है - दृष्टिकोण परिवर्तन की अर्थात सम्यक दृष्टिकोण के विकास की।

सम्यक दर्शन का विकास एवं शिक्षा

किसी भी समाज या राष्ट्र का भविष्य, उस राष्ट्र के विद्यार्थी होते हैं। कोठारी आयोग ने कहा था कि भारत के भविष्य का निर्माण विद्यालय की कक्षाओं में हो रहा है। जब विद्यार्थी राष्ट्र का भविष्य हैं तो उज्जवल भविष्य के निर्माण में सर्वोपरि भूमिका शिक्षक तथा अभिभावकों की है। अतः व्यक्ति निर्माण, चरित्र निर्माण एवं स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु आवश्यक है - शिक्षक, शिक्षार्थी तथा अभिभावकों में दृष्टिकोण परिवर्तन की अर्थात सम्यक दृष्टिकोण के विकास की। वर्तमान में शिक्षा का मूल उद्देश्य एवं कार्य यही होना चाहिए, क्योंकि विभिन्न व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान का यही मूल उपाय है। सम्यक् दृष्टिकोण के विकास के कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं-

गुरु के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण - किसी भी विद्यार्थी अथवा व्यक्ति की सफलता में सबसे प्रमुख योगदान उसके गुरु या शिक्षकों का होता है। किन्तु वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से गुरु - शिष्य के मध्य मानसिक दूरियां बढ़ती जा रही है। शिक्षक का सम्मान कम होता जा रहा है। विद्यार्थी केवल स्वार्थ पूर्ति तक शिक्षक से वास्ता रखने लगे हैं। गुरु के प्रति यही मिथ्या दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के गुणात्मक ह्रास का प्रमुख कारण भी है। जिस राष्ट्र की संस्कृति में गुरु को भगवान से ऊँचा दर्जा प्राप्त था, गुरु-आज्ञा

Scanned by CamScanner

शिष्य को सर्वोपरि होती थी, वर्तमान में शिक्षक की कम होती गरिमा चिन्तनीय प्रश्न है। यदि हमें जीवन में वास्तविक सफलता प्राप्त करनी है तो शिक्षक या गुरु के प्रति सम्यक् श्रद्धा का विकास करना ही होगा। विद्यार्थियों को शिक्षक की कमियों को नहीं, बल्कि उसकी अच्छाईयों का अनुकरण करना चाहिये, गुरु को यथोचित सम्मान देना चाहिये।

ज्ञान के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण- सद्ज्ञान ही वह साधन है जो न केवल व्यक्ति को सफल सुखी एवं महान बनाता है बल्कि मुक्ति का रास्ता भी प्रशस्त करता है। किन्तु वर्तमान में विद्यार्थियों का ज्ञान प्राप्ति के प्रति दृष्टि उचित प्रतीत नहीं होती है, जो विद्यार्थियों में असफलता एवं बेरोजगारी के बढ़ने का संभवतया सबसे बड़ा कारण है। विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख स्रोत अध्यापक, पाठ्यपुस्तकें, पुस्तकालय, माता-पिता, सहपाठी तथा इन्टरनेट होते हैं। किन्तु आज विद्यार्थी कक्षाओं में जाना ही नहीं चाहते पाठ्यपुस्तकों को केवल परीक्षा के समय देखते है। पुस्तकालय में फिल्मी खबरें पढ़ते हैं या गपशप करते हैं। माता-पिता से कभी पढ़ाई की बात नहीं करना चाहते तथा इन्टरनेट पर फेसबुक, वाट्सअप या अश्लील सामग्री देखते हैं। ज्ञान के प्रति यही मिथ्या दृष्टिकोण विद्यार्थियों के जीवन को अंधकारमय बना रहा है। इस दृष्टिकोण को बदलना ही होगा। ज्ञान के साधनों का सम्यक् उपयोग सुनिश्चित करके ही हम जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस दिशा में शिक्षक तथा माता-पिता का सहयोग सर्वाधिक अपेक्षित है।

इन्द्रियों के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण - मानव शरीर की पांच इन्द्रियां (आंख, कान, नाक, जीभ तथा त्वचा) ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख साधन हैं। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य जीवन शैली के प्रभाव से हम इन्द्रियों के गुलाम होते जा रहे है, उसमें भी सर्वाधिक कामेन्द्रिय की गुलामी। इससे सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है। इन्द्रियों के प्रति मिथ्यादृष्टि का प्रभाव सबसे अधिक विद्यार्थियों पर पड़ रहा है, जिससे उनमें काम वासना, नशे आदि की प्रवृत्ति पनप रही है, जो उनके भविष्य को अंधकारमय बना रही है। अतः आज आवश्यकता है, इन्द्रियों के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण के विकास की। इन्द्रियों के प्रति संयममय दृष्टिकोण विद्यार्थी जीवन की सफलता का मूल मंत्र है। आहार के प्रति सम्यक दृष्टि है - समय पर, भूख से कम, सात्विक भोजन करना, निद्रा के प्रति सम्यक दृष्टि है - समय पर सोना, सूर्योदय से पहले उठना, उसी प्रकार मादक पदार्थों का कभी सेवन न करना, काम वासना के वशीभूत होकर कभी अनर्गल कार्य न करना सम्यक दृष्टि के अन्तर्गत ही आते हैं। विद्यार्थियों में सम्यकदृष्टि के विकास से न केवल उनका जीवन सुधरेगा, बल्कि स्वस्थ समाज का निर्माण भी हो सकेगा।

व्यवसाय तथा संस्थान के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण - व्यक्ति जो भी व्यवसाय करता है उसे पूर्ण ईमानदारी तथा कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ करना अर्थात प्रमाणिकता के साथ करना, व्यवसाय के प्रति सम्यक दृष्टिकोण कहलाता है। किन्तु वर्तमान में इसके विपरीत देखने को मिलता है। शिक्षा क्षेत्र में ही देखें तो अनेक अध्यापक न तो समय पर संस्था में पहुंचते है,

Scanned by CamScanner

कक्षा अध्यापन में भी लापरवाह होते हैं तथा समय से पहले ही घर चले जाते हैं। यह न केवल शिक्षा जैसे पवित्र व्यवसाय के साथ धोखा है बल्कि वे कितने ही विद्यार्थियों के भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। इसी प्रकार अनेक विद्यार्थी तथा अध्यापक ऐसे भी होते हैं जो जिस शिक्षण संस्थान में अध्ययन, अध्यापन करते है बाहर उसकी ही बुराइयां करते हैं तथा संस्थान में दूसरों को प्रवेश लेने से मना करते है। ऐसे मिथ्या दृष्टिकोण वाले शिक्षक तथा शिक्षार्थी जीवन में कभी सफल नहीं होते। ऐसे उदाहरण केवल शिक्षा क्षेत्र में ही नहीं समाज के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलते हैं। यह लोगों को यह चिन्तन करना चाहिये कि जिस व्यवसाय अथवा संस्थान से उनके पूरे परिवार का पालन-पोषण हो रहा है, उसके प्रति उनकी क्या जिम्मेदारी है। अतः व्यवसाय में पूर्ण प्रमाणिक होने के साथ ही, व्यक्ति को हमेशा उस संस्थान की प्रगति में सहयोग करना चाहिये, जिसमें वह कार्यरत है।

माता-पिता का बच्चों के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण - बच्चों के स्वस्थ विकास में सर्वाधिक भूमिका माता-पिता की होती है। किन्तु वर्तमान में माता-पिता अपनी भूमिका निभाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। अनेक माता-पिता, बच्चों के प्रति अति महत्त्वाकांक्षी होते है। वे बिना सोचे समझे अपनी महत्त्वाकांक्षा बच्चों पर थोपते हैं और चाहते हैं कि उनका बेटा/बेटी डॉक्टर या इन्जिनियर बने। बच्चों की रूचि, क्षमता आदि से उन्हें कोई वास्ता नहीं होता। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि बच्चे क्षमता से अधिक प्रयत्न करके भी सफल नहीं हो पाते तथा तनावग्रस्त हो जाते हैं तथा कभी भी आत्महत्या जैसे घातक कदम भी उठा लेते हैं। कुछ माता-पिता आज भी लड़का-लड़की के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। जो सुविधा तथा प्राथमिकताएं लड़कों को देते हैं, लड़कियों को नही देते। इससे लड़कियों की महत्वाकांक्षाएं दब कर रह जाती हैं, और उनकी योग्यताओं का जो लाभ समाज को मिलना चाहिये नहीं, मिल पाता। इसके साथ अनेक माता-पिता ऐसे भी है जो दिन-रात अर्थार्जन में लगे रहते हैं, उनके पास बच्चों के लिए वक्त ही नहीं होता। ऐसे बच्चों के मानसिक विकास पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है जो उन्हें नशे तथा अनेक सामाजिक अपराधों की ओर प्रवृत्त करता है। इस प्रकार की समस्याओं के समाधान हेतु माता-पिता में बच्चों के प्रति समयक् दृष्टि का विकास ही एक मात्र उपाय है। उन्हें बच्चों को पर्याप्त समय देते हुए उनकी रूचियों तथा क्षमताओं के आधार पर शिक्षा उपलब्ध करवानी चाहिये तथा बेटा-बेटी में कभी भेदभाव नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन दर्शन का अवदान सम्यक् दर्शन वर्तमान समय में विभिन्न व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान का प्रभावी साधन है। वर्तमान में सर्वाधिक आवश्यकता है विद्यार्थियों में सम्यक् दर्शन के विकास की, जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग के विभिन्न अभ्यास अत्यधिक सहायक सिद्ध हुये है, अतः विद्यालय/महाविद्यालय में इनका अभ्यास करवाया जाना चाहिये। साथ ही विद्यालयों में नियमित रूप से प्रेरक प्रसंग, प्रार्थना, सद्साहित्य के अध्ययन की प्रेरणा,

Scanned by CamScanner

सामाजिक कार्यों में भाग लेने की भावना आदि के माध्यम से भी दृष्टिकोण परिवर्तन में सहायता की जा सकती है।

सम्यक्दर्शन की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में जैन दर्शन में कहा गया है-

चरणज्ञानर्योवीजं यम-प्रशम-जीवितम्
तपः श्रुताद्यधिष्ठानं सद्भि : सद्दर्शनंमतम्।। (ज्ञानार्णव, पृ. 120)

सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र का बीज है, यम (महाव्रतादि) और प्रशम (विशुद्ध भाव) के लिये जीवन स्वरूप है। तप तथा श्रुत का आश्रय दाता है। इस प्रकार जितने भी शम, दम, बोध, व्रत, तप आदि होते हैं, उन सबको सफल कने वाला सम्यक् दर्शन ही है। जैसे बीज के अभाव में वृक्ष की उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धि और फलोदय नहीं होता, उसी प्रकार ज्ञान और चारित्र की उत्पति, स्थिति व फलोदय सम्यकत्व के अभाव में नहीं होता। यथा-

विद्यावृतस्य संभूतिस्थिति वृद्धि फलोद या :।
न सन्त्यसति सम्यकत्वे बीजाभावे तरोरिव।। (रत्नकरण्डश्रावकाचार, पृ. 69)

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि सम्यक दृष्टिकोण का विकास प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनिवार्य है। क्योंकि दृष्टि शुद्धि से ही विचार या भावशुद्धि होती है तथा विचार शुद्धि सद्आचरण का आधार बनती है। सामाजिक जीवन की सफलता हेतु सद्आचरण की सर्वोपरि भूमिका होती है।

सन्दर्भ सूची

1. जैन, सागरमल, भारतीय आचार दर्शन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, 2010
2. मंगलप्रज्ञा, समणी, जैनागम में दर्शन, जैन विश्वभारती, लाडनूं, 2005
3. आचार्य समन्तभद्र, 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत परिषद, 2005
4. आचार्य महाप्रज्ञ, जैन दर्शन का सम्यक दर्शन, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशक, नई दिल्ली, 2004
5. जैन, जिनेन्द्र, जैन काव्यों का दार्शनिक मूल्यांकन, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001
6. मोहनोत, श्रीचंद, जैन विचार दर्शन, वेद ग्राफिक्स, बैंगलोर, 2000
7. आचार्य महाप्रज्ञ, जैन दर्शन : मनन एवं मीमांसा, आदर्श साहित्य संघ, नई दिल्ली, 1995
8. सं.पा. युवाचार्य महाप्रज्ञ, 'उत्तरज्झायाणि', जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, 1993
9. एस. गोपालन, जैन दर्शन की रूपरेखा, वाई.ली. प्रिन्टर्स, नई दिल्ली, 1993
10. मेहता, मोहनलाल, 'तत्त्वार्थसूत्र', पार्श्वनाथ विद्याश्रमशोध संस्थान, वाराणसी, 1976
11. आचार्य तुलसी, जैन सिद्धान्त दीपिका, आदर्श साहित्य संघ, चूरू (राज.), 1982

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

Scanned by CamScanner